तर्ज-मेरे दो अनमोल रत्न
मेरा तो घर मूल वतन,
परआतम के हैं जहां तन

1- मूल वतन धनी ने बताया,
परआतम का भेद लखाया
खोल दिए हैं निज नैनन

2- अपने धनी को जिसने रिझाया,
इत बैठे सुख धाम का पाया
हो गये वो इत उत धन धन

3- ए सुख निसवत से जाना है,
निसवत वालों ने माना है
जो हैं प्रीतम की सैंयन

4- अपने घर अब तो जाना है,
साथ पिया तेरे रहना है
है जहां थिरचर सब चेतन

Nijanand App